सभ्यताक भ्रम
(कविता-संग्रह)

रचयिता

राज किशोर मिश्र

1.सभ्यताक भ्रम

सभ्यता के डेग बढ़ल,
खोह सँ, पाषाण सँ,
सिंधु नदी के तीर सँ,
काशीक महामसान सँ।

बनवासी के पर्णकुटी सँ,
कुम्हारक चाक, बासन सँ,
बाँसक कनसुपती, पथिआ सँ,
राजा के सिंहासन सँ।

शांति-मर्यादा सृजन मे,
चण्डिका, दुर्गा सप्तशती,
अर्गला स्तोत्र, देवी कवच,
'असुर भयाउनि 'भगवती।

सुर-असुरक संग्राम सँ,
पंचवटी ,आ' लंका सँ,
कुरुक्षेत्रक चक्रव्यूह सँ,
रण मे बजैत डंका सँ।

तक्षशिलाक आचार्य सँ,
'अर्थशास्त्र' के पन्ना सँ,
राज-चौहद्दी-विस्तार लेल,
षड्यंत्र-व्यूह-बहन्ना सँ।

वेद-ऋचा सँ, त्रिपिटक सँ,
वराहमिहिरक खगोल-ज्ञान सँ,
आर्यभट्टक दशमलव-खोज सँ,
विज्ञानक शोध, अनुसंधान सँ।

कोन हाबा कतय सँ आएल ?
पूब भर सँ कि पछिम सँ,
मिजहर भऽ कऽ घमल सभ्यता,
जमल जे बड़ छल हिम सँ।

जीवनशैलीक नव-नव सिद्धान्त,
सभ लागल अपन पसार मे,
लूझि-लूझौअलि बात-विचारक,
नहि ककरो किओ सम्हार मे।

कैक्टस-धाधर सँ भालरि काँपल,
डिस्को रेबाड़ल , सोहर ,
खेत छोड़ि चाँचरि पड़ाएल,
अरिपन पर अङरेजी मोहर।

चलैत रहल चितकबड़ा सभ्यता ,
एकपेड़िआ ,कखनो राज-पथ,
बनवासी, महानगर मे कखनो,
कखनो भीष्म ,कखनो जयद्रथ।

हमरा लागि रहल अछि ओ तँ
चौबटिआ पर ठाढ़ अछि,
लाल-हरिअर भेल सिग्नल,
भ्रम-सान्द्रता बड़ गाढ़ अछि।

सीरध्वज जनक सनक ओ
बनि गेल अछि विदेह ,
आ' शेयर बजारक सेहो ओकरा
अछिनरे छैक सिनेह।

सिराउर पाड़ैत, हरबाहक चुबैत घाम मे,
कुल-गोत्र सँ ,पैरबी सँ पाओल नाम मे।

सूगरक खोभाड़ सँ किकिएबाक गर्द-अनघोल मे,
कार-शोरूमक भीतर मे,मर्सिडीज-क्रयक मोल मे।

मोहाबरा, लोकोक्ति मे,
गढ़ल जनजीवनक सिद्धांत,
होटल मे तऽ रिलॉक्स-टाइम,
आ' खोपड़ी मे मासांत।

रामलीला-मंडलीक बिलौकी मे,
सिने-जगतक आभा-भौकी मे।

पसाहनि कएने अर्थतंत्र,
मोहाएल ओहि पर सभ्यता,
राजतंत्रक ऐश्वर्य-वैभव,
आ' प्रजातंत्रक भव्यता।

धर्मदण्ड , आब संविधान,
जनता अछि सभ सँ महान।

धनुख-वाण सँ ल' क' परमाणविक अस्त्र,
गाछक छाल सँ ल' क' आधुनिक वस्त्र।

पुष्पक सँ मंगल आ' चंद्रयान,
सभ्यताक गरुड़वाहन, विज्ञान।

अनुष्टुप् किंवा मुक्तछंद,
सभ्यता-मन मे बड़-बड़ द्वन्द्व।

2.प्रायश्चित्त

हिरोशिमाक परमाणु-आगि सँ,
उठल होयत अन्तिम चिनगारी,
चौसरि दाओ पर हारल होएत,
लोक कोनो निज घर-घराड़ी।

विध्वंस-सारा पर रोपल तुलसी,
छुबैत ओकरा कोनो शांति-बसात,
कुरुक्षेत्र जखन पाओल पूर्णाहुति,
पाण्डव-नयन सँ नोरक बरिसात।

मोनक समुद्र के अतल तल पर,
औँड़ मारि रहल कोनो ताप,
अगम जलक साम्राज्य बीच मे,
ज्वालामुखी बनल कोनो श्राप।

अतीतक कादो-कर्दम-विस्तार,
ओँघराएल ओहि मे ,कोनो बात ,
इतिहासक काल-परिधि मे पैसि,
ककरो सँ मोनक ,आत्मसात् ।

विराट शांतिक महादेश मे,
उठल होइक ओहि मे विद्रोह,
बहल जाइत होए नोर-धार मे,
बँचल ने होइ अपना लेल सोह।

अपन कर्म सँ उपजल क्षोभ,
मानस पर उगल अग्नि-शूल,
ताओ-दंश सँ व्यथित भेल,
आ' ठाँ' -ठाँ ' पर अश्रु-फूल।

अतीतक प्रेत पाछाँ पड़ल छै,
बेर -बेर ,बाट छेकि छै ठाढ़,
भसिआएल अपसोच-बोहमे,
पापक रंग लगै छै गाढ़ ।

मोनक अभ्यन्तर पसरल निबिड़ अन्हार,
सोच कोनो जे ताकि रहल तम सँ उद्धार।

अभिशप्त मोनक मुक्ति लेल,
चाहैत अछि पतिआ काटी,
फूटल छै अजस्त्र अश्रु-धार ,
होइ छै गंगाजल चाटी।

कोनो अधर्मक सोनितक दाग,
अवचेतन मन पर लागल,
प्रायश्चित्त-सप्त नद नीर सँ,
शुद्धि करत , ओ अभागल।

कारी मोनक अन्हार मे,
काजर ,कलंकित परिवेश पर ,
नवचेतना सँ ऊष्मित भऽ कऽ,
घमल आ' अछि शेष पर।

कुपित जतय छथि मनोदेवता,
हुनका लेल कोन पूजाक फूल?
केहेन अछिनजल? चानन कोन?
नबेद कथी ? धुप-सरड़, गुगूल?

ह्रदय सँ निकसल भाव-नीर,
होइत अछि ओ निश्चित निराल,
सुरसरि जल सन करत शुद्ध ,
उद्धार 'सगरक' बाल-गोपाल।

पश्चात्तापक नोरक क्षार सँ,
ओदरल पाप-अवचेतना,
ओकर माटिक क्षरण भऽ रहल,
घटल अवसादक वेदना ।

औन्हा-पथारी अछि उठल,
कोनो शांति-तीर्थ ओ ताकि रहल,
मंत्रोच्चार मनः शुद्धि लेल,
ई स्वतः ,नहि दोसर अछि कहल।

उठल छैक ई बेकल भाव कतहु भीतर सँ,
स्वर निकलल, दलदल मे फँसल चीतर सँ।

मोन सँ निकसतै पाप जखन,
प्रायश्चित्त किछु तँ हेतै,
पंचकर्म ,वायु-कफ-पित्तक
संतुलन देह मे बढ़ेतै ।

भारी मोन हल्लुक हेतैक,
शांत भऽ जेतै झंझावात,
मनस् बनि जेतै तीर्थ सन ,
प्रायश्चित्त सँ हेतै नव परात।

3.सृजनशीलता

ब्रह्मांडक अनंत आकृति, विस्तार,
कतहु ने गाड़ल कोनो बुर्जा,
सृजनशीलता, हुनर विधाताक !
कतेको , कतेक सूर्य मे ऊर्जा ?

अद्भुत अछि ई सृष्टि–सृजन !
स्रष्टा के सर्जनधर्मिता !
वर्णन नहि कऽ सकैत अछि,
नहि शब्द कोनो, नहि कविता।

कोना चलत आकाशगंगा ?
कते–कते दूर पर कोन–कोन तारा ?
ने धक्कम–धुक्की ,ने मारा–मारी,
ने लागल एक सय चौआलीस धारा।

ओहि विराट,विलक्षण सृजन कैँ,
शत्-शत् प्रणाम,
सर्जनात्मक ऊर्जा सँ ,
अछि बनल सृष्टि कैँ गाम।

बाह रे शिल्पकारक छैनी!
पाथर मे भरि देलक अछि जान,
आकृति-सिराउर मे भाओ छिटल,
समुद्रक बालु पर उगल प्राण।

शब्द मे कविगण भाओ भरैत छथि,
तँ मोन मे उठि जाइत अछि उत्फाल,
हँसबैत अछि ओ, कनबैत अछि ओ ,
शब्द बनैत अछि कवच आ' ढाल।

कुंडलिनी पर फड़ैत अछि ऊर्जा,
जखन सूतल सँ जागल,
सुंदर सोचक सृजन-सामर्थ्य कैँ,
जे बुझि ने सकल ,ओ अभागल।

इजोतक रचना सात्त्विक ऊर्जा सँ,
ओहि मे सूर्यक अंश,
आलोकित भूः , भुवः, स्वः ,
तम,तमस् तत्त्व विध्वंश।

ब्रह्मांड मे गुरुत्वाकर्षण- रचना,
संबंध-सृजन नवदम्पति-अङ्गना।

वादक-स्पर्श सँ वीणा -तार,
कएल सम्मोहक संगीत-सृजन,
अनुराग-रसायनक प्रतिक्रिया,
स्वर-निसाँ मे मातल बहुवचन?

सिरजन-तरु पर लुधकल अछि ,
कला-संस्कृतिक पुष्पित सुमन,
पुङ्केसर पर पिरीति-पराग,
लए घुमि रहल अछि मधुप, भुवन।

कुम्हारक चाक घूमि-घूमि,
माटि सँ बना देलक अछि बासन,
उच्छृंखल बटुकक स्वभाव मे ,
विद्यालय लओलक अनुशासन।

रीति ,रेबाज , परम्परा,
बनलैक नियम–कानून ,
ई सभ मनुखेक अछि रचल,
भेटैछ जाहि सँ सुकून।

प्रकृति केँ समानान्तर मे,
रचल मनुक्ख अपन संसार,
सुइ सँ ल' क' वायुयान धरि,
सभ सुख–सुविधा पर अधिकार।

सिरजन लेल नित नव्य दृष्टि,
क्रौँचक क्रन्दन सँ महाकाव्य,
रणक्षेत्र मे श्रीमद् भागवत् गीता,
विध्वंसक बीच सृष्टि संभाव्य।

कलिआ नागक मस्तक पर,
वासुदेवक बाँसुरी–वादन,
मर्त्यलोक मे अनर्गल नहि,
जिनगीक सुखद सम्पादन।

पतझाड़क झरल बीआ सँ,
अंकुरित फेरो हेतैक मधुमास,
अन्हारक पेट मे अछि इजोत ,
गिड़ल मुदा क' सकल ने नाश।

मोन मे सुविचार आ'
ह्रदयमे भरल पिरीति,
आत्मा पर ने पाप कोनो,
बुद्धि परम् पुनीत।

सृजनशीलता तखन पनुघैत अछि,
वरेण्य सुसोच तखन अरघैत अछि ।

4.प्रदूषणक सराप

काँपि रहल अछि मोन हमर,
धड़कि रहल अछि हमर छाती,
बुझा रहल अछि, मिझा रहल अछि,
राति मे चमकैत अम्बर-बाती।

सतत् झरल जा रहल जेना,
क्षितिज पर भोरहरबाक लाली,
दिनकरक अग्नि-वृत्त सँ मानू ,
ऊर्जा क्रमश: भऽ रहल खाली।

लागि रहल अछि, प्रभाहीन
भऽ रहल अछि विधुक माड़रि,
फूलक केसर सूखा रहल अछि,
सुखलाही अछि भेल काँड़रि।

विषम भऽ रहल तरुक जौबन,
ठूठ्ठ देह आ कोकड़ल पात,
सोनित नहु-नहु सूखि रहल छै,
झुत्थुर, अछि भऽ रहल निपात।

सर मे सरसिज सूखि रहल अछि,
देखि बताह सन भेल अछि षट्पद,
काँट -कुश आ' डाभ उगल छै,
अहुरिआ काटि रहल निर्जल नद।

ई नहि हमर कथमपि अछि भ्रम,
बुझा रहल सद्यः यथार्थ,
जिनगीक सत्य ,प्रदूषण मे,
हम ताकि रहलहुँ ,बनि सिद्धार्थ।

धुआँ मे कार्बनडाइऑक्साइड,
सूँघि रहल अछि गाछ-बिरीछ,
फेँटल फेकटरीक विषाक्त पानि,
सर सँ पीबि रहल अछि रीछ।

प्रदूषण नापि लेलक अछि पृथ्वी,
छूटल ने अछि कोनो गाम,
ओकरहि अङराग सँ राङल,
वसुन्धरा भऽ रहलीह झाम।

हुनकहि कपार बथाएल अछि ,
प्रदूषणक सभटा पाप,
अन्दर मे बरकैत ज्वालामुखी,
ऊपर सँ भोअङ्गर ताप।

झीलक जहर सन पानि मे,
झलहेरिक ककरा सऽख?
सुखल चाननि-किरिन-थोका,
शुक्ल सेहो जनि कृष्णे पऽख।

सुधङ चिड़ैआ, शाल्मलि तरु पर,
पड़ल धाधि मे, उजड़त खोँता,
कंक्रीट-बन जनु असुर-आक्रमण,
हरित-यज्ञक बनत के होता?

गम्हराएल धान कैँ पठाओल जाइछ,
महकल जलक सधोरि,
महुराएल माटि कैँ देखि भटपुरैनि ,
ठाढ़ भेल करजोड़ि।

पशुक आँखि सँ, क्षोभ मे,
निकसल नोरक नमहर पलार,
ककर पाप बथाएल ककरा सिर,
धरणी सभ कैँ करैछ दुलार।

पश्चात्ताप,
तखन प्रायश्चित्त,
कहू के नहि बुझत
अप्पन हित?

उड़ल जाइत अछि एहि दुनिआ कैँ,
सभटा रङ्ग-रभस,
प्रदूषणक सहस्र पाणि मे,
विध्वंसक अङ्गोर ,अबस।

कनक बिरहि ,सभ बीछत झिटका,
सत्य ने भऽ जाए कहुँ ई खटका ?

5.परीक्षा

हम बूढ़ विद्यार्थी,
दऽ रहलहुँ, परिस्थितिक अग्नि-परीक्षा,
हारलहुँ , कखनो उत्तीर्ण भेलहुँ,
शिथिल मोनक आब कोन इच्छा?

किएक बनू परीक्षार्थी आबहुँ?
मुदा समय ठाढ़ लऽ मान-दण्ड,
अनिच्छुक सामिल कयल जाइछ,
पूछल जाइत अछि प्रश्न प्रचण्ड।

सनातन-कर्त्तव्य-सीढ़ी चढ़ि,
पहुँचि गेलहुँ कालक एहि ठाम,
परीक्षा-भवन तैओ अछि जिनगी,
आबहु छोड़अओ ,दिअओ विराम।

मुदा व्यर्थ करब अछि प्रार्थना,
गरुड़व्यूह ,समयक होइत अछि रचल,
लाक्षागृह, रावणक साधु-भेष ,
कते कुहकामय अप्रत्याशित मचल।

वृद्ध मुनिक तप देखि किए,
इन्द्रासन डोलत?
बूढ़ बड़द कैँ क्रयक लेल,
के दाम खोलत?

कखनो उनटा, कखनो सुनटा कालचक्र,
सोझ बाट छोड़ाय, पकड़ाबैत अछि वक्र।

लील-अकास सँ खसय लगैत अछि अठबज्जर,
आफद, मंगल-पथ पर आबि बनैत अछि मिज्झर।

कुल -वंश -समाज -राज -देशक परीक्षा,
हरिश्चन्द्र काशी मे माँगि रहल छथि भिक्षा।

राज -तंत्र, गण -तंत्र पर समयक फेरी,
जुग कैँ सोझाँ मंगल आ' दुर्दिनक ढेरी।

अग्नि-परीक्षा दैत-दैत
अछि असोथकित भेल अर्थतंत्र,
जिनगी स्वयं साफल्य लेल ,
ताकि रहल सदिखन नव मंत्र।

काल- व्यूह मे फँसल रीति -
रेबाज, प्रथा ओ परम्परा,
नूतन व्याख्या, नव परिभाषा,
ओहि मे ओझराएल धरा।

समय ककरा-ककरा नहि जाँचल ?
खसल किओ ,किओ रहि गेल बाँचल।

कुरुक्षेत्र मे भीष्म , पार्थ विद्यार्थी,
जाँच भेलै के स्वार्थी, के धर्मार्थी।

परिस्थितिक अछि चमत्कार,
बृहन्नला आ' शिखण्डी,
अबला नारी बनि जाइत अछि,
काली आ' रणचण्डी ।

नित्य साँझ मे सूर्य देवक
भऽ जाइत छन्हि अवसान,
ओगरैत रहैत छथि सगर राति ,
अन्हारक महामसान।

मर्यादा-जाँच समाज करैत अछि ,
विपत्ति करैछ धैर्यक जाँच,
कुम्हार पका रहल अछि बासन ,
अहिआबैछ पाकल कि काँच।

नेतक जाँच, नियति के जाँच,
मुरदा जड़ल ? अचिआ-आँच।

गाछ सँ कूदि माथ पर बैसि जाएत मर्कट,
पताल फोड़ि, पएर डसत तक्षक धरकट।

कतहु कोनो निशिचर अछि ,
कतहु कोनो अगिआ बेताल,
राम-नाम कैँ जप करैत ,
कालनेमि बजबैछ करताल।

पाण्डित्य ओ मूढ़ते टाक नहि,
अपन -आनक सेहो परेख,
काल, कुण्डली बना दैत अछि,
सुदिन आओर दुर्दिनक लेख।

डेगे-डेगे , खने-खने ,
जिनगी प्रश्न-पत्र लऽ ठाढ़ ,
जुनि पड़ाउ ,उतारा ताकू ,
अबिते रहतै गरमी-जाढ़।

६. सोनित

कोनो मनुक्खक शिरा, धमनी कैँ
फोड़ि कऽ बहाओल गेल रक्त,
माटि पर लागल लाल दाग,
नृशंसता लेल जे अछि अनुरक्त।

ई तँ देहक संजीवनी,
एहि तरलक रचना कएल देवता,
प्राणक पुण्य -जल प्रवाहमान,
सर्जत ने मनुज, एतावता।

एहि सँ रङल भूमि अशोभित,
भोअङ्गर राक्षसक क्रूरता,
क्रोधाग्नि सँ निकसल स्फुलिङ्ग,
से देखि कुपित छथि देवता।

मत्त इरखाक मुह सँ बहराइत,
बिकराड़ अग्नि केर ज्वाला,
मनुजताक ई बहल सोनित,
सज्जित असुर-शस्त्र सँ डाला।

भाङ्गल बन्धुत्वक लाल खण्ड,
ई दाग मनुजता पर प्रचण्ड।

सभ्यताक कतरल माउस -पिंड,
अंतिम अन्याय केहेन भिसिण्ड।

कोनो भाएक खून, कोनो माएक खून,
जे सिन्दूर सन ,कएल माङ कोनो सून।

क्षितिज सँ मेटाओल लालिमा,
ई ,छिटल पिशाचिनी-कालिमा।

लोभक तरुआरि सँ बहल लिधुर,
टूटल सम्बन्ध कोनो चूर -चूर।

महापाप-सिमानक लाल परिधि,
सृष्टि पर क्रूरता, देखलनि विधि।

माया-ममताक लाल लहास,
कऽ रहल बर्बरता अट्टहास।

विनाशक पाड़ल भूमि -पुंड,
सृजनक कटल रुंड -मुंड।

मनुख लेल नहि उचित अछि कोनो तरहक हिंसा,
कथमपि नहि कर्मणा-वाचा, नहि होअए मनसा।

बाघ-सिंह तँ बुझि ने सकैत अछि,
ने विवेक, ने ओकरा लोक लाज,
देवता बाद तँ मनुक्खे होइत अछि,
कोनाक' ओ कऽ सकैछ ई काज?

खसय ने सोनित एक्कहु ठोप,
हिंसा सँ मनुजता होयत लोप।

स्वर्गक सुख भूगोल मे ,
ई भऽ सकैत अछि संभव,
हिंसा-मुक्त भऽ जाय अगर,
ई, क्षणभंगुर ,नश्वर भव।



7.नव-पुरान

बाह रे निखिध मड़ुआ !
जगलै ओकर भाग,
अन्तर्राष्ट्रीय भोज मे,
पहिराओल गेलै पाग।

तामक थारी-बाटी सभ,
सजल डाइनिंग-टेबुल पर,
महाभारतक पुनः प्रसारण,
देखि रहल लोक केबुल पर।

सद्यः देवता वरेण्य सवितुः,
प्रातः काल सूर्य-नमस्कार,
संगे -संग विज्ञानक उदय,
नवका-नवका आविष्कार।

नव पीढ़ी कैँ पुरान पीढ़ी सँ
छै की कोनो अरारि ?
बात के, होइत अछि बतङ्ङड़ ,
बात लेल किए मारि?

होन्हि स्वागत मोन सँ,
नव शिल्पी कैँ ,नव साहित्यकार,
न्याय होअए ,ने कि जुग-जुग सँ
बस होन्हि अहिल्या कैँ उद्धार।

पहिनो शांतिक छलैक खगता,
ओहिना तँ अछि एखनो,
असभ्यता मे छलैक हिंसा,
जे बात एखन, सएह तखनो।

नव्यता वर्चस्व लेल,
अछि बड़ भेल अपसिआँत,
पुरना चाउरक इडली कहिआ
लगलै ककरो, अनसोहाँत?

धर्म स्थापना बेर-बेर ,
मुक्तिक नव -नव पंथ,
पुरान बाटक जीर्णोद्धार,
उगलाह नबका महंथ।

फूलो माए छलथिन बुधिआरि,
पिंकी माए छथिन बुधिआरि,
कुरुक्षेत्र मे भेल महाभारत,
खेत-पथार लेल एखनो मारि।

लोभ, क्रोध सभटा जीबिते अछि,
बदलि गेलैक बाना,
सासु-पुतोहु मे एखनो ओहिना,
एक दोसर के ताना ।

धर्महि सँ हर तथ्यक व्याख्या,
विज्ञान तोड़लक रूढ़िवाद,
परञ्च मनुक्ख आ प्रकृति बीच मे,
बढ़ि रहल अछि कटु संवाद।

जुग अछि अपन जोगाड़ मे,
लऽ ली सभटा श्रेय,
अतीतक प्रेत घूमैछ बनि
'उपमान' ने कि 'उपमेय'।

पूर्व मे जनमल अर्थ-तंत्र,
पूर्वहिँ सभ्यता जनमल,
जोड़ल गेल, किछु तोड़ल गेल,
काल ने बैसल कलबल।

कतेक पुरान ब्रह्मांड अछि ?
अछि की एखनो नऽव?
बूढ़ भेलाह आब सूर्य की ?
तारागण भेलथि दऽब ?

बयस भ' गेलै चन्द्रमा के ?
कि चमकत एखनो पुरनके चान?
आकि आओत, नव पीढ़ीक लेल
नवका विधु जे होएत जुआन?

बूढ़बा ठूट्ठा गाछ रहत,
कि ओकरे सारा पर तरुण तरु ?
ओ ठहुरी भ' जारनि बनि जाएत ,
आ' द्रुम नवतुरिआ , सएह बरु ?

भूमि-उर्वरता नूतन अछि , की
प्रकृति जाइत छथि झखरल ?
किछु बात तँ अछि ओहन,
जे मानव जाति केँ अखड़ल ।

पुरान नचैत अछि अपन परिधि मे,
नवका के अछि अपने ताल,
ककर महत्व ककरा सँ कम अछि?
महापञ्च छथि एक्कर काल।

ओहो नीक, किछु नीक इहो,
दूनू मिलि कऽ महो -महो।



8. नदीक धार

ऊपर सँ जखन खसबाक रहैक,
तँ कतेक उत्साह छलैक नदी मे ?
लगैइए नहि जे गतिक लेल किओ
एतेक उताहुल भेल छल सदी मे।

पाथर सँ लड़ैत, माटि केँ फोड़ैत,
नीचाँ पड़ाएल बढ़ैति गेलि,
दुनु कात साक्षी गाछ-पात,
गर्तक अनुराग मे आन्हर भेलि।

जौबनक जोश, सर्पिनी चालि,
लेने आँखि मे चित्र समुद्रक,
चित्त चेहाएल, मोन औनाएल,
सुनैत बात नहि कोनो मित्रक।

नीर नहि, उन्मादक रस ओ,
जे पिबि-पिबि छलि मद-मातल,
नैहर छोड़ि प्रीतम घर जाएति,
मोन पिरीति बड़ जाँतल।

कानन-पथ पर नेहक गीत,
थम्हि-थम्हि गाबि रहल बसात,
सुर-मे-सुर अछि मिला रहल,
बाटे-बाटे गाछक पात।

अँटकल नहि, नहि भटकल कत्तहु,
लहालोट अछि भेलि तरङ्गिणी,
पानिक तृष्णा भेलैक नहि तिरपित,
भेटलैक आगाँ कतेको संगिनी।

नहूँ-नहूँ थिर होइत गेलि,
पहुँचलि जखन धरातल पर,
यथार्थ-रूप देखल जखन ,तँ
उत्तरदायित्व आएल नद पर।

हिमक्षेत्र सँ आएलि बस्ती दिस,
उदेम-फेक्टरी, गाम-नगर,
गरीबी, बेमारी, पिआस ,पीड़ा,
जिनगीक असल समस्या अहगर।

चिड़ैअक लोल कैँ ठंढा जलक भेटलैक सुकून,
घड़िआरक मुह मे फँसल हरिणक टाङक खून।

नदीक मस्तिष्क मे गेलै ई बात,
पाओल पशु-गौँत , कचरा-करकट ,
मृतकक माटिक अस्थि-कुंभ,
जजाति लेल आ' पिआसल मर्कट।

तीर्थक शंखनाद,फेक्टरीक सायरन,
आ' सुखल गरीबक खेत,
पानि ओकर मुदा चाही सभ कैँ ,
उपयोगक अपन-अपन छै नेत।

ओ अपन मोक्षक तैआरी मे,
किएक त' समुद्र छलै आब थोड़बे दूर,
उमंग,दायित्व ,निर्वाण-पद,
ओकर जिनगीक अरुदा ओत्तहि पूर।

९. कौआ

कौआ तोहर काउँ-काउँ,
आब नीक लगैत अछि,
तोहर सोचब -सोच ,
बड़ सटीक लगैत अछि।

तोँ तँ ने होइ छेँ हिन्नू,
आ' ने तोँ मुसलमान,
दहेज लेल ने काटर ,ने
कोजगराक भार-चुमान।

दक्षिण-पथ नहि वाम- मार्ग,
तोँ ने ब्राह्मण, तोँ ने शूद्र ,
एक्कहि ग्रहक वासी भऽ कऽ,
धेलकहु ने पक्षपाती-क्षुद्र।

कारी भेलेँ तँ नीग्रो नहि ,
गरदनि गोर ,तँ तोँ नहि अङरेज,
तोरा मे ने कोनो रङ्ग-भेद ,
बढ़िआँ छौ नस्लवाद-परहेज।

काग -काग मे कहाँ देखलिऔ, इरखा -द्वेष?
मारि -मरौअलि,खून-खूनामय, फौदारी-केश।

जेहने अफ्रीका, तेहने   युरोप,
कागत्वक नहि मिसिओ भरि लोप।

जुग-जुग सँ छौ एक्कहि स्वभाव,
केहनो हबाक नहि कोनो प्रभाव।

नहि छेँ गरीब , नहि छेँ अमीर,
अर्थशास्त्रक तोँ तँ छेँ माहीर।

वायस, नहि तोहर प्रजाति मे,
भेलैक संख्याक विस्फोट,
प्रकृतिक अनुकूल गामी तोँ,
ने नमहर , ने तोँ छोट।

गंगा गेलेँ असनान करय,
तँ तोँ पीलेँ महकल पानि,
अनुभव तोहर कहलकौ,नीर
पीबी नीक सँ छानि।

रे कौआ! प्रकृतिक असली बौआ !
चतुरो छेँ आ' छेँ बुधिआर,
मादा काग डाइनि ने जोगिनि,
ने ओकर सामाजिक बहिष्कार।

मर्त्यलोक केँ नीक सँ बुझलेँ,
तोँ असंग्रही, तोँ वीतराग,
कागभुसुण्डीक वंशज! तोरा,
भेटअओ खीर कि मड़ुआ-साग।

कंचन- पिंजर -बंधन कैँ,
कौआ तोँ ने छैँ गुलाम ,
स्वाधीनता के साधक तोँ,
स्वच्छन्दताक चाही ने दाम।

ने चाही तोरा भीख-दान,
ने नुका-छिपी, बस काउँ -काउँ,
ने कौड़िआ-कादर ,ने देखल तोरा
करैत कखनो डाउँ -डाउँ।

ने गुटबन्दी, ने राजनीति,
ने पूरब-पछिम के लड़ाइ,
ने हाहुति ने स्वार्थी प्रवृत्ति,
ने बैसि करब अपनहि बड़ाइ।

ने प्रकृति-संसाधन पर कुठाराघात,
कएलैँ ने प्रदूषित जल-माटि-बसात।

तोँ तँ प्रकृतिक छेँ सपूत,
मुदा स्वार्थ-सिद्धि मे के अछि पागल?
प्रदूषण-धुंध मे ग्रह केँ धकेलि,
तोरो बना देलकौक अभागल।

10.महानगर

महानगर मे कतेको अछि नगर,
कंक्रीट-गाछ सघन अछि सगर।

हेराइत,बौआइत, ढहनाइत लोक,
सभ सँ सभ अछि अनचिन्हार,
गोत्र, कुल, आ' गाम नहि एत्त,
एत' पाइ, पद, जोगाड़, रोजगार ।

व्यापारक ई विराट डीह,
रोजगारक सुंदर नंदन बन,
स्वप्नलोक नोकरी के आ'
अलकापुरी मे कुबेरक धन।

मेट्रो स्टेशन पर बड्ड भीड़,
धर्रोहि लागल अस्पताल मे लोक,
सड़क पर ट्रक,ऑटोक जाम,
रेड-लाइटक ठाँ'-ठाँ' रोक-टोक।

बुद्धिजीवी ,आ' श्रमजीवी सेहो,
सिमपोजिअम, तँ श्रम-भत्ता पर भाषण,
ज्योतिषाचार्यक आश्रम फूजल,
ओ बुझाबथि ग्रह लोकनिक अनुशासन।

बीस टके प्लेट छोला-भटूरा
वेन्डर बेचैछ फुट-पाथ पर,
फाइव-स्टार होटल मे ओएह,
द्वि हजार लगभग माथ पर।

उसनल अल्हुआ नोन संगेँ,
महग बड़ लागि रहल अछि होटल,
डिजिटल दुनिआ महानगर मे,
गूगल पर जाँच करू फूड-पोर्टल।

पानि बिकाइत अछि, कोखि बिकाइत अछि,
बिका रहल अछि रौद-बसात,
अपनो लेल नहि समय छै लोक के,
गाड़ीक स्टीअरिंग पर भोजन-भात।

भावना- संवेदना कैँ,
कीन लेने अछि टाका,
भाओ-भीख मँगिते रहि जेता,
एतय नथुनी काका।

महानगर के कौओ होइत छैक बड़ चलाक,
छोटो बात पर भऽ जाइत छै एतय तलाक।

भनसाघर तरल सिँघाड़ा सन
मेरिडिअनक किचेन मे बनल मोमोज,
गामक नाटक सन नुक्कड़ नाटक
कनॉट-प्लेसक, सेहो बेजोड़।

महानगर अछि सहरक जंगल,
केसरि-चीता हिंसक अगाध,
शांतिपूत नीलकंठ, कपोत खग,
ऋषि-मुनि आओर कुटिल व्याध।

11. दलिद्दर

जीर्ण कुरता पर चेफरी कतेको,
ठाम-ठाम ओकर धोती फाटल,
दरिद्रताक अछि चित्र बनाओल,
खोपड़ीक चार पर पन्नी साटल।

दाना बिनु ओकर डेकची मे ,
छुच्छे उधिआ रहल छै अदहन,
अहाङ-भाओ के जरनहि बिना,
भऽ रहलैक अछि रावण-दहन।

चिड़ै सेहो बिछने होएत,
किछुओ तऽ अन्नक दाना,
होएत ने उपासल, कंठतर,
रान्हल ककरो साना।

भूखल पशु पगहा तोड़िक' ,
चरि क' आएल होएत घास,
मुदा दलिद्दर के निजगुते,
आइयो भेल हेतैक उपास।

ओकर बाड़ी पर कबजा केलकै,
गामक दलाल, महाजन,
चक्रवृद्धि बेआजक चक्रव्यूह,
उठेलकै खोपड़ीक झाझन।

बाँचल छै ओकर देहक ठठरी,
आ' दरिद्रताक अभिशाप,
सोनित सूखल ,पाँजर पचकल,
अँतड़ी मे बुभुक्षा के विलाप।

अन्न तँ एखनो उपजले होएत,
मुदा निरसल ओक्कर अङना,
कोन-कोन दरबज्जे निकसि जाइत छथि,
नित्य देवि अन्नपूर्णा ?

बजारवाद आ अर्थ-व्यवस्था,
ओकर अपन छै दाओ-पेँच,
धन-वंचक आ' दलाल सपिण्डे ,
स्वार्थ सिद्धि लेल कतेको मेच ।

अर्थ-तंत्रक कोनो दुर्घटना मे ,
पसरल ओकर छै अस्थि,लिधुर,
हड्डी चिबबैत अर्थ-पिशाच सभ,
सोनित पीबैत बुझि मधु-मधुर।

खोपड़ीक टाटक टूटि पर,
अछि टका-टुकुरक षड्यंत्र ,ढीठ ,
अपराधी सँ लागल रक्त-दाग
दरिद्रताक बनल ओ सिद्ध-पीठ।

दलिदरा के तँ भऽ चुकल छै,
धन सँ सम्मोहन-मारण-उच्चाटन,
कहलथिन जोतखी-'नहि लक्ष्मी-योग,
ने देखबे मुहथरि पोखरिआ-पाटन। '

उदास डीह पर बैसल अछि भूखक बेताल,
दीनताक फुटल अछि ओतए बेस पताल ।

अस्थि-पिंजर पर जिनगीक मुर्दा,
उघने जा रहल अछि,
भूखक अग्नि सँ उठल धुआँ के,
सुँघने जा रहल अछि।

पूर्व-जन्मक पाप बुझअओ
कि अपन निष्फल कर्म?
कि भागक दोख बुझि लिअओ,
आकि अर्थतंत्र पर शर्म?

ठंढाएल चुल्हा, झमान तसला,
कोनो अर्थ-बधिकक बनल शिकार,
घरक टूटल केबाड़ कऽ रहल अछि ,
दरिद्रताक सुंदर सिंगार।

भूख नहि अछि ककरो गुलाम,
जीत नहि सकलाह कृष्ण-राम।

तँ, की करतैक दलिदराहा ?
बुभुक्षा लेल त' समान नृप-रंक,
न्याय करथु जग-भाग्य-विधाता,
दीन पर किए भूखक आदङ्क ?

12. श्मशानक फूल

ओ तँ सुंदर फूल छै,
हँसब, मुसुकाएब ओकर स्वभाव,
मसान ओकर जन्म-स्थान ,मुदा
अघोरी सन नहि छै मनोभाव ?

चिताक चिरिङ बसात लऽ ,
सुकुमार पँखुड़ी पर धऽ सैँतल,
निशा भाग राति मे धधकैत
श्मशान-अग्निक धाह ऐँठल।

हँसमुख पुष्प अछि ,प्रत्यक्षदर्शी,
नश्वर जीवक देहक अंत,
जगतमोह मे लोक सम्मोहित ,
कपटी, धूर्त, ज्ञानी, धनमंत।

देहक छाउर कँ एक्कहि रंग,
भस्म भऽ गेल सभटा अलङ।

श्मशान मे नित्य जरैत अछि,
अभिमान ,कहिओ धन-सेआख,
सुंदर सुकुमार लावण्य रूप,
कहिओ हथकंडा, रुतबा, धाख।

विधिकरी सन कठिआरी सभ,
मृत देहक करथि औपचारिकता,
मोहक टुटैत जमल आवरण,
अखरैत किनको मृतक-रिक्तता।

ओ कुसुम, हँसअओ
कि मनाबअओ शोक?
कऽ की रहल अछि,
अपेक्षा लोक?

नित्य होइत अछि एक्कहि बात,
जगतक अछि जे असल यथार्थ ,
देखि रहल अछि श्मशानक फूल,
जिनगीक जे सद्यः फलितार्थ।

अचिआक छाउर आ चिराइन गंध,
ओ फूल आब भऽ गेल   बैरागी,
सुख-दुःख के सम भाओ मोन मे,
भुवन मे ककरो किओ नहि भागी।

ओही फूलक बन्धु-बान्धव सभ,
अछि जे सभ उगल कोनो आन ठाम,
मोहिनी-माला, कोनो भाषण-मंच पर,
कोनो सभागार, कोनो बाबाधाम।

श्मशानक फूल भऽ कऽ ,
हँसब नहि ओ छोड़लक,
कहिओ सुनैछ झौहरि,कहिओ
समदाओन संग ढोलक।

ओ ने तांत्रिक, ओ ने अघोरी,
श्मशान सँ ओकरा नहि कोनो स्वार्थ ,
बिहुँसैत फूल , भऽ गेल अछि ज्ञानी,
देखि-देखि मर्त्य लोकक यथार्थ।

देखि रहल अछि, ओतय सत्य केँ ओहिना घूमैत,
लोकक मोन केँ पवित्र होइत , छै जकर अपैत।

उड़िआइत माया ,देह-छाउर संग,
निठुर सत्य प्रत्यक्ष,
ओत्तक फूल केँ कोन दुविधा !
खुजि गेल छै ज्ञानक अक्ष ।

मसान मे कुसुमित ओ फूल !
सिखि लेलक अछि जिनगीक रीति,
निर्विकार भऽ बिहुँसैत रहैछ,
आ' ओत्तहु परसैत रहैत अछि प्रीति।

ओ ,मृत्यु-घाट पर ,जिनगीक फूल,
हँसैत -बिहुँसैत आ' मिटबैत शूल।

कुसुमक नेत्र कतेक सुंदर छै ?
बिहुँसल मुखक लावण्य,
मरघट मे उदासीक प्रभाओ त'
ओकरा पर छैक नगण्य।

ओ तँ ओना अछि जगतसौंदर्यक प्रतिनिधि,
देखि रहल अछि जिनगीक अन्तिम परिधि।

नित मृत्यु देखैत मसानक फूल,
हँसैत अछि ,मुसुकाइत अछि,
जिजीविषा छै तेहेन ओकरा मे,
जिनगी लेल औनाइत अछि।

13. साम्प्रतिक परिवेश

बसात मे नहि नेहक स्पंदन,
असभ्य सन अछि भेल नृशंस,
की कहू हाल चारू कातक ?
विषादक दिन-दिन बढ़ल वंश।

बीहरि कतेको ठाम-ठाम ,
नुकाएल ओहि मे बिषधर व्याल,
धोपचट मे जँ पड़ल पएर तँ
किन्नहु नहि छोड़त ओ काल।

दिनादिष्टी अछि घूमि रहल,
सहर-गाम मे शुंभ-निशुंभ ,
जानि ने की करतै समाज केँ ?
अछि धेने हाथ मे गरल-कुंभ।

संवादक स्वर मे नहि मिठास,
षड्यंत्रक अछि गुरुत्वाकर्षण,
शकुनीक चौसरि अड्डा पर ,
बड़ दुर्लभ अछि सज्जन-दर्शन।

ए.सी,टीवी, फ्रीज आ की नहि,
सुविधा के अछि सजल बजार,
मुदा दुर्योधन के शीश-महल मे,
विश्वासघातक छै उपचार?

टका-टुकुर, उपभोक्तावाद,
अर्थतंत्रक उपनिवेशवाद ,
जे पछुएला, पाछू रहला,
एहि होड़क किछुए छथि अपवाद।

समानक सौंदर्य,
कड़कड़ौआ टाका,
मोहपाश मे,
फँसलथि काका ?

जो रे दलिदराहा!
छौ फूटल करम,
बूझलए नहि तोँ,
एहि जुगक मरम।

'भावना ' थिक एखन मूढ़ता,
सभ सुख धेने रुपैआ ,
बिनु कैँचा ककरा के पूछय?
पाइये सँ बाबू-भैआ।

टाका सँ छैक भरल जिलेबी मे मिठास,
पंचतत्व मे भऽ गेल छै लछमी के वास।

दुर्गति छै ओहि जिनगीक जकरा नहि छदाम,
एहि दुनिआ मे तऽ कफनो के लगैत छै दाम।

सम्बन्ध नहि, बँटबाराक कागत,
सम्हारि क' रखै छथि भैआरी,
बँटि जाइत अछि बन्धुत्व पहिने,
तखन खेत सतबिघबा, बाड़ी।

लुटा रहल अछि अपन अरुदा,
पी कऽ मदिरा, भाङ,
क्षणिक सुखक लेल लोक किछु,
गमबैछ आङ-समाङ।

टिकली टूटल, लहठी फूटल,
गरा सँ उतरल मंगलसूत्र,
अठोङरक उखरि-समाठ टूटल,
मर्यादा भाङ्गल यत्र-कुत्र।

मतलब सँ मतलब छै लोकक,
विनाश बाद शांति 'अशोकक'?

मृत्यु -घाटी मे अछि कोना,
उतरि गेल अपनापन?
दया ,मानवता , ममता बिनु,
द्रव्ये सँ जीवन-यापन?

दसे अवतार सँ चलत ने काज ,यौ भगवान!
दुनिआ मे फड़ि गेलैए बड़का-बड़का हेमान ।

फोँक भेल जा रहल परिवेश,
अनुराग बेगर की रहत शेष?

सोना-चानी ,अमूल्य धातु,
सभ अछि बाहरक अलंकार,
मोन तँ सुखले रहिए जाएत,
जँ नहि बहत सिनेहक धार।

देहे बसल अछि, मन-हृदय,
ओकरा चाही भावक नीर,
पिरीति सँ अगधल मोन जे,
अनेरो चमकत ओहन शरीर।

14. अन्हार सँ इजोत

नभ सँ ताकि रहल अछि उडुगण,
अन्हार-काजर सँ पोतल वसुधा,
अवनिक देह पर चढ़ल कोना कऽ,
जहर आसुरी ? ओ छलि दुद्धा ।

एकरे बेओँत मे बैसल अछि ,
तिमिर-षड्यंत्रक अपन जोगाड़,
उजरा मंत्रक स्वर ओझराएल,
खोललक भरम अपन व्यापार।

फोँफ कटैत अछि ,मोनक सीधा,
निशाचर साधि रहल निज ध्येय,
घुरमी लागल धवल-तंत्र केँ,
छिपल जोति कोना होएत प्रमेय ?

खञ्ज-खोहड़ सन अछि इजोत,
अछि प्रभाहीन, भऽ गेल अथबल,
मोनक कोन अधोगति ओक्कर?
दुबकल, बैसल अछि ओ कलबल।

ई करिआ-तंत्रक कोनो अनुष्ठान् ,
जिनगी पर विध्नक चलल वाण।

दिवा जेना अभिशप्त भेल होअए,
ध्वांत साँझ मे रहैत अछि काँच,
अन्हारक सबतरि सजल मञ्च,
हेतै राति कापालिक तिमिरिआ नाच ।

होएत उजोर प्रतिक्षारत,
सामर्थ्यक फेर करत संधान,
दुनिआँ ओकर भरोसे सूतल,
करत नव दिनक अनुसंधान।

एही अन्हार मे गम्हराएल ,
भीतरे-भीतर इजोत,
तिमिर-जलधि मे फेरो सँ,
उतरत कोनो पोत ।

अन्हारक सघन बोन मे,
गमकत जोतिक चानन ,
सरसिज सूँघत अरुण-किरिन,
चमकत वसुधा-आनन।

इजोतक धवल शृङ्गार सँ,
क्षितिजक सजत पुबरिआ मुह,
संघर्षक सिनुरिआ अङ्गराग सँ,
पोछल देखि, खग बाजत 'कूह'।

प्रकाशक महासमुद्र मे,
तमिस्त्राक अस्थि-विसर्जन,
आएल ओ बेर, अरुणाभ सँ,
सृष्टि-उदयक होएत सर्जन।

नभ मे इजोतक कोँढ़ी फूटल,
अन्हारक कारी काजर छूटल ।

पुनर्स्थापित उद्योत मे,
अन्हार-प्रलय सँ उबरल धरणी,
जिनगीक नवल दिवसक सृजन,
तिमिरक भेल गोदान-वैतरणी।

करिआ-झुम्मड़ि खूब खेलाएल,
कालक कोनो तंत्र,
समयक कोनो मुह अछि चमकल,
उत्थानक ई मंत्र ।

दिवसक उज्जर दप -दप आनन,
पाड़ल ओहि पर इजोतक चानन।

पाँखि खोलि नभ मे उड़ल अछि,
बढ़ल दूर खगराज,
सुनबैत व्योम केँ ,भिनसर ई,
तमिस्त्रा सँ भेटल स्वराज।

भोरक सौंदर्य-पसाहनि मे,
लागल अछि खिलल प्रसून,
ऊर्जा-पाग मे बोड़ल अछि ,
अछि मिठगर काल्हि सँ दून।

डूबि क' दिवा ऊगल अछि,
अनुभवक ठेढ़ पर ठाढ़ ,
दिवस जिअत जिनगी पूर्ण,
बुझितहुँ आओत अन्हार।

15. ऑनलाइन सेवा कम्पनीक सेवक

कान सँ सटल मोबाइल ओकर,
मोटरसाइकिल-पैडल पर टाङ,
मोन मे लक्ष्यक ठाँ कतेको,
समान बँटैत अछि बनि समाङ।

महानगरक पूब मे कखनो ,
कखनो बस्ती कोनो धताल,
खेलि रहल ओ झिझिर कोना,
काजक पाछाँ बनल बेताल।

स्नो-पाउडरक मोटरी कोनो,
कोनो पैक कएल ,जओ-आटा,
टूथ-पेस्ट, मसल्ला, केकक डिब्बा,
अगरबत्ती , पादुका -बाटा।

नोन -हरदि सँ एना -ककबा,
दबाइ, जकरा धेने छै लकबा।

नेना-भुटका लेल आइसक्रीम,
कोनो गृहिणीक ऑर्डर हरिअर सीम।

अत्रिक आश्रम दिस शिष्य कोनो,
कमण्डल मे भरने गंगोदक,
कम्पनी कर्मचारी ,चानन ,गङ्गौट,
आ' पहुँचा रहल अछि मोदक।

मोन ओकर छै अपसिआँत,
आबि ने जाइ सेवा-आदेश,
मोहल्ला, सेक्टर, कॉलोनी,
रौद किंवा लागल कुहेस।

मोटरसाइकिलक पाछाँ मे,
ष्टएण्ड पर राखल बड़का मोटा,
झाँउ -झाँउ कऽ कुकूर उठलै ,
बढ़ल गली मे पोछि कऽ पोटा।

जे आदेश होइ कम्पनी के,
परफ्यूम सँ लऽ कऽ रङ-राग,
हीटर, टोस्टर, एअर- प्यूरीफायर,
पारिजात सँ लऽ कऽ पाग।

अर्थ-तंत्रक कर्मयोगी,
तीतल अछि ओ घाम सँ,
समान देलक, आब टाका चाही,
कम्पनीक निर्दिष्ट दाम सँ।

महानगरक कंक्रीट-जंगल,
दोगे -दोगे, प्रधान बाट,
ओकर झोरा मे समान देखिक',
लागत मॉल ,गामक हाट।

भोरे सँ ,जखन कौआ डकल,
आ' से आधा राति,
बहिते रहैत अछि कार्यकर्ता,
कटिते कर्म-जजाति।

बजारक नूतन परम्परा सभ,
उपभोक्ता सबहक खगता अनंत,
टाकाक बेओंँत,खर्चक बेओंँत,
जिनगी छै महानगरक जीवंत।

ककरो चीजक छैक बेगरता ,
ककरो भेटि गेल छै रोजगार,
जीवन-शैली बदलि रहल छै,
पसरि रहल छै खूब बजार।

ओकर घाम मे नव चाणक्यक,
लिखल गेल अछि अर्थ-नीति,
नव प्रोडक्ट लेल लोकक तृष्णा,
खूब बढ़ल अछि ओहि सँ प्रीति।

खूब अरजू, खूब खरचू,
इएह अछि नव्य उपभोक्तावाद,
पूर्वक संग्रह–मनोवृत्ति,
अछि भेल जा रहल ओ अपवाद।

16.लोक-जिनगी

भोर सँ साँझ ,साँझ सँ भोर ,
जुबक सिर बैसल बेरोजगारी,
एक सँ दोसर अस्पताल मे ,
लोक घुमैत अछि ऊघि बेमारी।

धीआ-पुताक पढ़ाइ-लिखाइ,
बैंकक कर्ज, महाजनक उधार,
बाट तकैत अछि लोक सभ ,
जे अर्थतंत्र मे हेतैक सुधार।

बस मे,ट्रेन मे,चाहक अड्डा पर,
राजनीति पर गप्प-छड़ाका,
विरोध-प्रदर्शन खातिर कखनो,
जाम होइछ गाड़ी के चक्का।

बेटीक बिआह मे बर-बरिआती,
वस्तुजातक लेन-देन,
पेटी-पेटार,गहना-गुड़िआ ,
सभक ओरिआओन येन-केन।

मोटरी-चोटरी, सनेस-बारी,
मधुश्रावणी आ कोजगराक भार,
साल भरि तँ नोतपूरीए लागल ,
खगल लोक के कहाँ सम्हार ?

खेतक आरिक घुसकौअलि ,
गाम आ' नगरक भूमि-विवाद,
केस-फौदारी , रेड़म-बहेड़म,
गामक पञ्चैतीक कटु-संवाद।

मृतक-श्राद्ध मे भोज लेल गामक बैसार,
सौजनिआ लऽ निमहता कि पूरा जबार।

स्वच्छंद रौदी, मतङ दाही,
दोकानक बिकरीक मंदी,
भैआ-बाँट पैतृक जमीनक,
तकर बादे फूटत जमाबंदी।

कबीर-पंथी,घनु भाइ दलान पर,
सुना रहल छन्हि हुनका निर्गुण,
गुदड़िआ गोसाइँ साड़ङ्गी पर ,
किरतनिआ सभक रामनामा धुन।

कखनो मधुरी काकाक उपदेश,
जे छथिन्ह अपने बड़का किरपन,
भजार हुनक आबि लोकाचारक
सुना कऽ करथिन्ह दिवस संपन्न।

बेटा , बाद मे बेटीक डेरा,
लऽ कऽ जेता सनेस-चङेरा।

किछु दिन तँ जमाएक उलहन,
किछु दिन पुतोहुक कबकब बोल,
कत्त रूकी आ' कतेक रूकी,
कऽ रहलथि बेचारा तकरे तोल।

चलला ओ फेर अपने दलान,
अपने अङना, अपने घर,
मोने-मोन सोचथि, की होएत ,
खसत जहिआ अपन धऽड़।

आम लोकक इएह दिनचर्जा,
जिनगीक इएह सभ रस-रसायन,
जीवन-दर्शन, इएह तँ सुदर्शन,
संसारक एतबहि अछि उपायन।

तकर बाद ,जय सिआराम जय जय सिआराम,
ओही विधि रहू भाइ! जाहि विधि राखथि राम।

ओना तँ भुवन मे रहैत अछि ,
नाना तरहक लोक,
जेना पानि मे बसैत अछि ,
माछ,शंख,घड़िआर,जौँक ।

बड़का-बड़का आडम्बर सभ,
बाजअओ बड़का-बड़का ढोल,
जगत् मिथ्या कि सत्य अछि,
अंत मे खुजैत अछि ओकर पोल।

17. सुंदरता

सुन्दरता अछि आमक मज्जर मे,
बिअहुती अंगनाक धमगज्जर मे।

भागवत कथाक भाव मे,
शिष्ट कन्याक स्वभाव मे।

सूर्य-किरिनक स्वर्णाभ मे,
सन्मार्ग सँ अरजल लाभ मे ।

प्रेम सँ उचरल बोल मे,
संघर्षक गर्दम घोल मे।

रञ्जक मिझाइत आगि मे,
सज्जन लोकक लागि मे।

सुहबा माङक सिनुर मे,
शिशिर कालक घूर मे।

उत्थान के शंखनाद मे,
शांतिक कोनो संवाद मे।

वसुन्धराक हरिअर पटोर मे,
घमैत अन्हार अहलभोर मे।

ऐँठलक टुटैत घमंड मे,
अपराधीक कठोर दंड मे।

प्रलय-जल पर उगि रहल
सृष्टि-नाभि-कमल मे,
जन-कल्याणक योजना
बनि रहल राज-महल मे।

विपत्ति कालक प्रस्थान मे,
योग्य लोकनिक सम्मान मे।

नेना के मुहक निश्छलता मे,
कोसिस आ' तकर सफलता मे।

दीनक अङना चुल्हा पर
बरकैत भातक अदहन मे,
कुजैत चिड़ै सभ गाछ पर,
विचरैत वन्य पशु बन मे।

नेढ़न-बाढ़न कैँ दुलार मे,
वंचितक कएल उपकार मे।

पाप-प्रायश्चितक नोर मे,
शुभ-उत्सवक सङोर मे।

स्वार्थ रहित अनुराग मे,
विदुर जी घरक साग मे।

मदमत्त भेल मधुमास मे,
अन्यायक सत्यानाश मे,

इजोत मे ,सृष्टि-सिरजन मे ,
अपसंस्कृतिक विसर्जन मे।

सत्य मे ,जय मे ,विजय मे,
क्षितिज पर अरुण-उदय मे।

धातुक सिरजल सौंदर्य मे,
नहि बसल अछि असल सिंगार,
दुखित मोन मे तन पर साजल,
ओ उनटे लगैत अछि भार।

आभूषण नहि ,नहि सुंदर पटोर,
नहि देहक सुंदरता चाम गोर।

सुंदरता सुचालि,चरित्र मे,
पिरीतिक रुचिर चित्र मे।

सुंदरता नहि अछि सोन मे,
सुन्दरता सुंदर मोन मे ।



18.अपसंस्कृति

उद्धत ,उद्दण्ड बसात अड़ल अछि ,
अहिबातक पातिल फोड़ल,
माङक सिनुरक घटल लालिमा,
टिकुली ,सोहाग पद छोड़ल।

वीणा झंकृत भऽ रहल मुदा ,
अछि निकलि रहल पाश्चात्य गीत,
केराक पात पर परसल बर्गर,
मुह के लागि रहल अछि तीत।

आङ्गल ताल ओ लय मे नाचि
रहल अछि नटुआ?
ठुमरी, ध्रुपद, मालकोस,
सभ बाड़ीक पटुआ।

फिल्मी गीतक तर्ज पर ,
महङ्कार-स्थान मे अष्टयाम ,
गन्धर्व-विद्या जनु भाव केँ ,
क‘ लेने होअए ओकरा लिलाम।

अर्थ-मेह सँ बान्हल जखन अछि
शिक्षा, ज्ञान, उपदेश ,
पाइयक भुइयाँ महुक जजाति मे
अध्यात्मक कोन लेश?

महिषासुर, मधु-कैटभ फेरो,
द' रहल चुनौती भगवत्ती केँ,
काली महरानी देखथि, चतरल
रक्तबीजक सघन लत्ती केँ।

कोइली बोल मे अङरेजी तान,
मधुमासक कोना हेतैक स्वागत ?
भगवती-जागरण के आयोजक,
हिसाब लगा रहल अछि लागत।

विद्यापति- स्मृति- पर्व पर,
डीजे सँ उठल अछि तुमुलनाद,
भोतिआएल ओहि मे 'जय-जय भैरवि',
केहेन संङ्गीतक ई अनुवाद ?

सप्तपदी आ अग्नि-शपथ सँ
निकलि रहल अछि आब तलाक,
भ' रहल नवल जीवन-शैली सँ ,
उत्पत्ति जिनगीक नव कलाक।

अङ्गना-घर ,आकि सासुर-नैहर,
मरजादा काटि रहल अछि घैहर।

क्षरण भ' रहल शिष्टाचारक ,
झरैत ओकर संस्कार,
दरबज्जा पर ,नुक्कड़ पर,
टुटैत ओकर अलङ्कार।

सोच मे, बेबहार मे,
रीति-रेबाज, व्यापार मे,
कनिष्ठ संग, वरिष्ठ संग,
शिष्टाचार, आचार मे।

स्थापित, प्रामाणिक विचार पर,
प्रश्न उठैत अछि बारम्बार,
टूटल आस्था, भाङ्गल संस्कृति,
मार्ग ,जकर महिमा अपार।

अकाश टूटत, पताल फूटत,
आदर्शक विरुद्ध क्षोभ-विद्रोह,
स्वच्छन्दताक उजाहि उठल,
की-की बहा लऽ जाएत बोह?

जुग के सहमति सँ उठल बिहारि,
एहि कैँ के टारत ? करत विरोध ?
परिणामहि टा, जे भोगऽ पड़तै,
के ओना सुनत संस्कार-अनुरोध?

गाम-सहर सभ भ' गेल ग्लोबल ,
एक्कहि रंग बात सभ ठाम,
परबोधब ककरा? सूनत के ?
अछि उखड़ि रहल पूर्वक सभ खाम्ह।

सामाजिक संस्था आओर व्यवस्था,
ककरा मे छै कतेक बाँचल आस्था?

'नवजुग कैँ छी पढ़ल-लिखल हम ,
तर्क हमर अछि मानदण्ड,
जिनगीक हमर अपन सोच अछि,
हम किए भोगू अतीतक दण्ड ?

हम गढ़ल स्वयं अछि अपना लेल,
सुख के की परिभाषा,
एहि जिनगी सँ, दुनिआदारी सँ ,
अपन आस-अभिलाषा।

नवाचार-नव संस्कार ,
नव पद्धति सँ वैवाहिक जीवन,
अतीत के संग पाड़ि लेलहुँ
हम अपना जिनगी के परिसीमन।

टुटतै बहुत व्यवस्था सभ ,
हमरा सभ लेल जे नहि अनुकूल,
नवतूरक नूतन सोच लग,
कोना जीर्ण-बात हेतै तूलम-तूल ? '

ई कोनो नवतुरिआक सोच,
नव चिंतन के संक्रमण-काल,
एहि लेल के दोखी ?अपराधी ?
टीका कलंकक ककरा भाल?

जुगपाकड़ि छथि सूर्य ,मुदा
की भ' गेलाह ओ आब निस्तेज?
बूढ़ विधुक चाननि सँ कनिको,
दुनिआ केलक अछि परहेज?

संस्कृति के बीच पाड़ल आँतर,
ई नहि कथमपि ठीक,
पूर्वजक बनाओल संस्कार-पथ,
नवयुगक रथक ओ लीक।

नवो कैँ नीक, पुरानो कैँ नीक,
ई बात सभ सँ भेलैक ठीक।

19.कोल्हुक बड़द

भोर सँ जोतल साँझ धरि ,
एना कहूँ भेलैए?
जोतले-जोतले ता' जिनगी,
एना कहूँ जीलैए ?

तेल मे तरुआ तरय किओ,
कोल्हु खीचि मरय किओ ।

'चरैवेति -चरैवेति ' जनु
ओकरे लेल गेलै गऽढ़ल ?
अहर्निश जे जोतल रहय ,
ओकरे लेल मंत्र पऽढ़ल।

कहिआ धरि ओ बहिते रहत ?
कहिआ धरि ओ सहिते रहत ?

धऽड़ खसा रहल छै आब कोल्हु के बड़द,
मनकंपन मे, थिर नहि छै धैर्यक सरहद ।

ओमहर नाचि रहल अछि पृथ्वी,
ओ अप्पन अक्ष पर,
एमहर मेहक परिक्रमा,
अहर्निश वृषभक लक्ष्य पर।

भोर सँ साँझ रहैत छै जोतल,
वृत्त बनाबैत, ओत्तहि गोँतल।

मालिक निकालि रहल सरिसओ कैँ,
पेटक मध्य पड़ल जे तेल,
तेलक बिकरी-बट्टा मे सँ,
किछु नहि बड़द कैँ जेतै देल।

बजारक जे छै जिलेबिआ खेल,
बड़द की जान गेलै ,बकलेल !

तेल मे रान्हल तीमन-तिलकोर,
सभ पर वृषभक मेहनति उधार,
की बाजत कोनो पैकार ,छिनै छै
निमुहधनक खरिक अधिकार ?

तेलक गंध मे मिजहर अछि,
बड़द पर कुशासन-शोषण,
आदति छैक भऽ गेल ओकरो,
ओहने परिवेश मे पोषण।

कान्ह पर कोल्हु-पालो ऊघब,
बुझैत अछि अपन अदिष्ट ,
विद्रोह-भाव जँ अबितो हेतै,
परिस्थिति सँ भेल अछि शिष्ट।

दृष्टि-पथ ओकर, ओ वृत्त छै,
ओ छै लक्ष्मण रेघा,
नहि जँ नापत ओहि परिधि केँ,
पड़तै फेरो पेङ्गा।

नाक सँ निःसृत पोटाक फेन,
मुह सँ खसैत गाजु,
नहि जानि कोन अपुआङ मुह मे,
करैत रहैत अछि पाजु।

जखन आँखि मे चमकैत हेतै,
तामसक कोनो चिनगी,
बाट तकैत होएत विश्रामक,
किंवा, स्वीकार ई जिनगी।

दिवंगतक मोक्ष-सद्गति लेल ,
दागल गेलैक बाछा ,
बनि गेल साँढ़ ,तँ डरे लोक
ओकरहि पाछा-पाछा ।

ओहि पथ-परिधि के अभ्यन्तर,
पसरल ओकर गोबर -गोँत,
शास्त्रकार नहि देलनि मान्यता,
पञ्चगव्य मे नहि कोनो बेओँत।

कोल्हु सँ जँ छुटिओ जाएत,
उठाओत कान्ह पर हर,
नहि त' कठही गाड़ीक जूआ,
ओहू मे जोतले आठ पहर ।

जँ पालो पटकत,दाँत निपोड़त,
तँ पोन पर पड़तै ठेङ्गा ,
नीको सँ जँ चलितो रहत,
नहि किछु तँ अड़पेङ्गा।

कोल्हु पर छै, जीवन-यापन,
आकि बुझअओ अत्याचार ?
मुक्तिक मार्ग कतय छै ओकर ?
ठोकैत रह' अपन कपार ?

कोल्हु छोड़ि क' के देतैक शरण?
शोषण मे ओकर, भरण-पोषण।

मालिक ओकर दयावंत भ'
करतैक ओ शोषण पर विचार ?
आकि सहिते रहत कोल्हु के बड़द ,
अपना ऊपर अत्याचार ?

कर्मपथ ओएह वृत्त ओकर,
ओत्तहि ओकर निर्वाण?
जोतले-जोतले तेआगि देत ओ,
जिनगी, अपन परान?

मुदा मृत्यु मे किए ताकअओ ओ अपन कैवल्य?
जिबितहिँ किए नहि शोषण सँ मोक्षक साफल्य?

20.सपनाक प्राण-प्रतिष्ठा

मोनक जलधि मे फेकलहुँ हम ,
तृष्णा के महजाल,
पकड़ि अनलहुँ अछि सपना कैं,
ओ एखन असत्य, कंगाल।

की अछि एखन ओ? छाही अछि,
प्राण-प्रतिष्ठा लेल मंत्रोच्चार,
जीबित करक अछि कर्मक बल पर,
तप सँ वरदान पाबक विचार।

कल्पनाक अस्तित्व कोन?
आएल फेरो चलि गेल,
मोन मे मधु लालसा दऽ,
कतऽ निपत्ता भेल?

परलोकक एकटा अप्सरा,
मर्त्यलोक आएलि घुमय,
किओ देखलक स्वप्न परी केँ, ओ
दौड़ल पद-ध्वनि केँ चूमय।

ओ, कहिआ नहि उपजल जजाति बनि,
मोनक उर्वर खेत मे ?
हँ ,नहि जीबित रहैत अछि कखनो,
अनुद्यमी आकि प्रेत मे।

जुग चाहे जे कोनो रहल होइ,
सतयुग, त्रेता, द्वापर,
जीबित रहल, ऊर्जित रहल,
कोनो-ने-कोनो आसा पर।

छोटका सपना, नमहर सपना,
नहि बुझल अछि की छै नपना।

धनक, बलक, मान-प्रतिष्ठा,
जुग पर अधिकार करबाक सपन,
मुदा हारल मोनक अङना मे,
ओढ़ाओल ओकरा जाइछ कफन।

ध्वनि हीन भेल ओ अन्तर्मन मे,
सदिखन रहैत अछि जागल ,
ओकरा पाछू के ने रहैत अछि,
जिनगी जा' धरि , पागल ?

अहंकार तुष्टिक ककरो सपना,
ककरो सपना प्रलयक,
ककरो सर्जन-सृष्टिक सपना,
सुख-शांति ,अनुनय-विनयक।

ककरो छै रोटी के सपना,
ककरो गाड़ी-अटारी,
ककरो सत्ता, ककरो भत्ता,
ककरो सुंदर नारी।

क्षितिज कैँ भोरक लालिमा,
सृजनक लालसा मे विध्वंस,
अन्हार मे इजोतक उद्दीपन,
कृष्णक बाट तकैत अछि कंस।

प्रतिभा कैँ छै ध्येयक सपना,
टेमी उताहुल, बनत बाती,
चान कैँ पुनिमाक लालसा,
विरहिणी कैँ प्रेमीक पाती।

हम अपन स्वप्न कैँ अङ-अङ मे,
ऊर्जाक लिधुर कैँ करब प्लावित,
मोनक पौती मे नहि पड़ल रहत ,
ओ जीबि सकय, से करब साबित।

सुन्दर ओकर रूप गढ़ब हम,
हम बनब स्वप्न कैँ शिल्पकार,
ओ मनोदेवता कैँ नैबेद्य ,
चलत-फिरत ,होएत साकार।

नक्षत्र जेना चमकत क्षितिज पर ,
हमर अरमानक सद्यः रूप,
हमहूँ देखब , लोको देखत,
सागर कोना बनैत अछि,कूप ।

अपने हाथक बात छै,
कोसिस तँ अछि हमर गुलाम ,
कर्मक कोखि सँ बनि यथार्थ,
अवतार लेत ओ हमरे ठाम।

सपना कँ हम देखब सदेह,
जुड़ाएत हमर आत्मा, नेन,
ऋषि कँ चाही कैवल्य, मुदा
हमर तृष्णा पाओत पूर चेन।

सपना नहि रहत प्रतीक्षारत,
देखब जिबितहिँ ,अपन मनोरथ,
ओही आसा मे स्वप्नक पाछू,
हम अहर्निश दौड़ि रहल छी पथ।

पोसब सपना,पालब सपना,
जा' जिनगी, ताबत रहत संगी,
कर्म पछोड़ ओकर धेने अछि,
खेहारैछ केसर जेना कुरङ्गी ।

21.महिका लेल ममता

पृथ्वी लेल छनि सूर्य कैँ पितृवत्
वात्सल्यक अम्बार,
नुकअओने ,जोगअओने अन्हार सँ,
अपन इजोत- अगार।

भू-कुंडली मे टिपि रहल छथि,
सदिखन जोति -प्रकास,
टपि ने सकैछ अन्हार ओतए ,
जा' धरि छथि टिकल अकास।

हिमालय पर, समतल पर,
मरुभूमि ,महासागर पर,
सिंह पर, गिद्ध-बाज पर,
गामवासी आओर नागर पर ।

अरुण अपन कनकाभ किरिन सँ,
धरणी पर करै छथि जिनगीक पोषण,
नन्हकिरबी लेल विश्राम ने कहिओ,
के करत हुनक बिनु भव कैँ रोसन ?

बापक बाद भाएक संरक्षण,
पहुँचलाह अकास मे चन्ना मामा,
भरदुतिआ लेल पिठार पिसै छथि,
चङ्गेरा मे सैँति रहली भू ,सामा।

शशधर रातुक अछि कोतबाल ,
बनि प्रहरी घुमैछ चारू कात,
ककर भैआ एहन शुभचिंतक?
सौँसे बह्मांह जनैछ ई बात।

चन्द्रमा निज धवल चाननि सँ,
चमकाओल अछि धरती,
संगी ओकर तरेगन ,वसुधा
एतेक सिनेह   की करती?

काजर-बिज्जर केने मेघबा,
बनल सिनेहक दूत,
औल सँ ऊष्मित धरा लेल ,
जल-आहुति हेतु आहूत।

नेहक बूँद सँ तीतल धरणी,
पहिर लेलीह हरिअर पटोर,
आँचर मे दूभि-धान बान्हल ,
कत्थक-नृत्य करैत अछि मोर।

अकास अनन्त अनुराग जोगअओने,
तनने ऊपर लील मेघडम्बर,
राति शशांक ,आ' दिवा दिवाकर,
सभहक सिंहासन ,लागल अम्बर।

प्रकृति ,आद्या भगवती रूपा ,
जगत् जननी गोसाउनि,
हुनकहि सँ पोषित पृथ्वी पर ,
गाछ ,सिंह, गृहस्थ ,मुनी।

बौआइत रहैत अछि सदिखन बसात,
कखनो पूरब, कखनो उतराङ,
जाइत रहैत अछि, अबैत रहैत अछि,
धरणीक छन्हि ओ खास समाङ।

परञ्च हिनक अपनहि संतति ,
चलाओल हिनकहि पर प्रदूषण-अस्त्र,
रुद्र-नृत्य, विनाशक तांडव,
चिरी-चोँत हिनक भेल हरिअर वस्त्र।

फूटल ओजोन परत सँ सतत्
चूबि रहल अछि महागरल,
ओदरि रहल अछि चाम धरणी केँ,
व्रण सँ पीड़ित छथि पड़ल।

फाटल आँचर मे देल सबहक ,
आँजुर भरि-भरि सिनेह आ' ममता,
चूबि रहल , बाँचत नहि कनिको,
प्रकृति-मनुक्खक की अछि समता?

हम सभ हुनकहि डीह बसल,
कर्त्तव्यो, जँ पाओल अधिकार,
प्रदूषण-मुक्तिक सनेस दऽ कऽ ,
किछु तँ कृतज्ञता करी स्वीकार।

22. हाकरोस

वेदना आ' विद्रोह भाओ,
तकर आनुपातिक मिश्रण,
ई घोर, मोन कैँ केने घोर,
बेबहार मे उभरैत लक्षण।

एकेटा नहि, व्यवस्था कतेको,
जे ठाम-ठाम उपस्थापित अछि,
दिल्ली सँ लऽ कऽ बेनीपट्टी,
किछु कार्यशील, किछु श्रापित अछि।

प्रजातंत्रक व्यावहारिक पक्ष,
काल, ठाम सबहक प्रभाओ,
सिंहासन लेल कटु राजनीति ,
जनता मोन पर कतेको घाओ।

कुर्सीक चौसरि मे हारि-जीत,
मर्यादा लागल अछि दाओ पर,
बौद्धिक अपराध भऽ रहल ओतय,
बढ़ि रहल खेल, छल-भाओ पर।

तुलाक एक पलड़ा पर पॉवर,
दोसर पर लादल छल-बल,
आसा कैँ अभिलाषी जनता,
देखि रहल अछि कलबल।

राजनीतिक मरुभूमि मे,
उमेदक अण्डीगाछ,
मिथ्या ,छद्मी आश्वासन सँ,
फुटलै फोड़ा, काछ।

अपन-अपन ध्वज लेने रण मे,
चंड-मुंड, कतहु ठाढ़ अछि कंस,
दधीचि , कतहु छथि हरिश्चन्द्र,
काजक, तँ किओ गुण गाबथि वंश।

ककरो लग छै शुद्ध नीर ,
ककरो लग पसरल गोबर-गौँत ,
किओ उपासल सेवा मे लागल,
किनको चाही मुड़बाक नोत।

भाङ पीबिक' कोनो व्यवस्था,
रहैछ ओ भकुआएल,
कतहु तमासा, नाच, ढोल ,
सिञ्जित, झनकैत पाएल।

अर्थतंत्रक कोखि मे,
विषमताक कोनो भ्रूण
प्रशासनक कतेको आङ मे,
धऽ लेने अछि घून।

व्यापारी वर्गक विपणन- नीति,
ओकर अपन छै नफ्फा -विधि,
लोकक बटुआ छोट होइत गेल,
बरकति भेलैक बजारक निधि।

हाकरोसक तप्पत बोल फूटैत अछि ,
आँखि-डिम्हा सँ चमकैत क्षोभ,
व्यवस्था मे व्यवस्थित अत्याचार
सँ,व्यर्थ भऽ चुकल लाभक लोभ।

पटाक्षेप भऽ गेलैक नाटकक,
रिक्ते रहतै, रहतै फोँक?
नेपथ्य मे असली बात होइत छै,
जनपीड़ा मे धरगर नोंक।

बाताबाती, खुष्टम-खेआल,
विरोध-पर्व मे उड़ल कुमकुम,
वीर रसक डॉयलॉगबाजी,
फलितार्थ मुदा अछि टुटरुम-टुम।

जिनगी होइत ने अछि कोनो प्रहसन,
एतऽ ,चिन्ता वसन ,निकेतन, रासन।

किए विद्यालय व्यवसाय-केन्द्र ?
अस्पताल मे जथगर टका-टुकुर,
डीलरक चाउर मे फैँटल आँकड़,
कारक सीट पर बिदेसी कुकुर।

हाकरोसक आगि मे ताओ छै,
ज्वालामुखीक चिरङ,
उमेद-लहास जरल कतेको,
उठत त' ने ई आगि सरङ ?

फकीर, अवधूत, सन्यासी, संत,
वंचित, दलित, गरीब, बोनिहार,
समय-कुंडली मे तकैत सभ ,
संवेदना आओर सुंदर बेबहार।

सेवा-पद्धति काज करय,
ने कि बनल रहय गजगोहि,
घमाउर मुखर करबा लेल लोकक,
लागय नहि धर्रोहि।

नहि छुच्छ आश्वासन , चाही काज,
सत्यक प्रमाण नहि माँगत समाज।

